मातृभूमि मैथिलीशरण गुप्त

(1) मातृभूमि कविता का सारांश लिखें।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की देशप्रेम भरी कविता है 'मातृभूमि'। इसमें कवि मातृभूमि का गुणगान करते हैं।

कवि कहते हैं कि मातृभूमि के हरित तट पर आकाश रूपी नीलांबर सुंदर लग रहा हैं। सूर्य और चंद्र मातृभूमि के मुकुट हैं। समुद्र उसकी करधनी है। नदियाँ देशवासियों केलिए प्रेम का प्रवाह करती हैं। फूल और तारे मातृभूमि के आभूषण हैं। पक्षीगण मातृभूमि की वंदना करती हैं। शेषनाग के फनरूपी सिंहासन पर भारतमाता विराजमान हैं। मेघ उस पर वर्षा का अभिषेक करते हैं।

कवि आगे कहते हैं - मातृभूमि की मिट्टी में लोट-लोट कर हम बडे हुए हैं। यहाँ घुटनों के बल चलते-चलते हम खड़े हुए हैं। यहीं रहकर हम परमानंद पाए और धूल के हीरे ुकहलाए। इसकी गोदी में खेल-कूदकर हम बडे हुए हैं। जननी मातृभूमि से ही हमने सभी सुखों का अनुभव किया। यह शरीर मातृभूमि ने हमें दी हैं। इस मिट्टी के अन्न-जल से बनी यह देह अंत में इस मिट्टी में ही मिल जाती हैं। ऐसी ममतामयी मातृभूमि के उपकारों का प्रत्युपकार कभी भी चुकाया नहीं जा सकता।

प्रस्तुत कविता में कवि ने मातृभूमि को भूमि का सिर्फ एक खंड न्हीं, अपितु सर्वेश की सगुण साकार मूर्ति मानते हैं। कविता द्वारा अपनी जननी जन्मभूमि के प्रति कवि अपने गर्व और गौरव की भावनाएँ व्यक्त करते हैं। यह कविता देश केलिए अपनी जान अर्पित करने की आह्वान करती है।

(2) मातृभूमि कविता की आस्वादन टिप्पणी लिखें।

श्री मैथिली शरण गुप्त हमारे राष्ट्रकवि थे। वे द्विवेदी युगीन प्रतिभाशाली कवि थे। भारतीय पुराणों में उपेक्षित कथा प्रसंगों एवं पात्रों को लेकर काव्य रचना करने में वे सिद्धहस्त थे। भारत-भारती, साकेत, यशोधरा, जयद्रधवध, पंचवटी आदि उनकी श्रेष्ठ रचनाएँ हैं।

द्विवेदी युगीन कविता राष्ट्रीयता तथा समाज सुधार की भावनाओं से प्रेरित रही। वीरता, त्याग एवं उदारता की भावनाएँ तत्कालीन कविताओं में मुखरित हुई। देशभक्ति, मानवतावाद तथा स्वच्छंद प्रकृति चित्रण की प्रधानता इस काल की रचनाओं की मुख्य विशेषताएँ हैं। ये सब विशेषताएँ हैं। ये सब विशेषताएँ गुप्तजी की रचनाओं में भी हम देख सकते हैं।

गुप्तजी की देशप्रेम भरी कविता है 'मातृभूमि'। मातृभूमि का गुणगान करनेवाली यह कविता देश केलिए अपनी जान अर्पित करने का आह्वान करती है।

कवि कहते हैं कि इस हरी भरी धरती पर आकाश-रूपी नीला वस्त्र सुंदर लग रहा है। इसका दूसरा अर्थ भी हो सकता है-मातृभूमि के हरे वस्त्र पर नीलाकाश रूपी आवरण बहुत सुंदर लग रहा है। सूर्य और चंद्र मातृभूमि के मुकुट के समान है। समुद्र उसकी करधनी है। नदियाँ देशवासियों केलिए प्रेम प्रवाह करती हैं। फूल और तारे मातृभूमि के आभूषण हैं। पक्षीगण मातृभूमि की वंदना कर रहे हैं। शेषनाग के फन रूपी सिंहासन पर भारतमाता विराजमान हैं। मेघ उन पर वर्षा का अभिषेक करता है। कवि मातृभूमि की इस सुंदर सगुण मूर्ति पर आत्म समर्पण करते हैं।

कवि आगे कहते हैं-मातृभूमि की धूल में लोट लोटकर हम बड़े हुए है। इसी भूमि पर घुटनों के बल पर चलते-चलते हम खड़े हुए हैं। यहीं रहकर हमने परमहंस के समान परमानंद पाया और धूल भरे हीरे कहलाए। (बाल्यकाल में हम इस मिट्टी में ही सब सुख पाए हैं। यहाँ के धूल के कण हीरे के समान पवित्र एवं अमूल्य हैं।) हम मातृभूमि की गोद में खेल कूदकर हर्ष का अनुभव करते हैं। इसलिए मातृभूमि को देखते ही हम आनंद मग्न हो जाते हैं। मातृभूमि जननी ही है। यहाँ जितना ही सुख पाते हैं, सब मातृभूमि का दिया हुआ हैं।

कवि कहते हैं कि हमारा यह शरीर मातृभूमि ने हमें दी हैं। यह मातृभूमि से बनी है और मातृभूमि के ही रस से सनी हुई है। अर्थात यह देश इस मिट्टी के अन्न जल से बनी हुई है। अंत में जब हमारी मृत्यु होती है तब हम इस मिट्टी में मिल जाते हैं। ऐसी त्यागी मातृभूमि के उपकारों का मूल्य जीवन देकर भी नहीं चुकाया जाता है।

गुप्तजी अपनी लोकप्रिय कविता 'मातृभूमि' में मातृभूमि को भूमि का सिर्फ एक खंड नहीं, अपितु सर्वंश की सगुण मूर्ति मानते हैं। भारतीय परंपरा के अनुसार जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान हैं। देशप्रेम भारतवासी केलिए भावना ही नहीं, सच्चाई भी हैं। करोड़ों भारतवासियों के इस देशप्रेम को कवि ने यहाँ वाणी दी हैं। कविता द्वारा अपनी मातृभूमि के प्रति गुप्तजी के गर्व और गौरव की भावनाएँ व्यक्त हुई है।

* **********

DO NOT COPY